P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भीष्म साहनी और नीलू नीलिमा नीलोफर

मंजुला शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
टी.डी.बी. कॉलेज,
रानीगंज, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

मनुष्य जीवन में प्रेम की भूमिका निश्छल है। विभिन्न रिश्तों के मूल में प्रेम भाव निहित होता हैं। युवाओं का प्रेम, प्रेम का सहज और स्वभाविक रुप है। इस प्रेम में जाति, धर्म, अर्थ, परिवार और समाज बाधक बनकर आते हैं। यही नहीं ये अपनी पूरी शक्ति के साथ ताकतवर होकर प्रेम के कोमल तंतुओं को कुचलने में सक्रिय हो उठते हैं। हिंदी साहित्य अपने आदिकाल से ही प्रेम को वर्णित और विश्लेषित करता आया है तथा प्रत्येक युग अपने समयानुसार प्रेम के विभिन्न संदर्भों को उजागर करता रहा है। प्रेम कहानी में उठने वाले अवरोधों की जड़ें काफी गहरी होती है जो परिणाम के स्तर पर दारुण और भयावह रुप ले लेती है जबकि प्रेम का परिप्रेक्ष्य अपने सात्विक रुप में ह्रदय को जोड़नें वाला होना चाहिए।

भीष्म साहनी द्वारा रचित 'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास प्रेम कहानी पर अधारित है। सुधीर, नीलू और नीलिमा अल्ताफ का प्रेम गहरा, सच्चा और निःस्वार्थ है एवं इनकी अनुभूति के समक्ष इनका परिवार और समाज आड़े आता है। जिसमें मुख्यतः साम्प्रदायिकता का प्रभाव रहता है। भिन्न धर्म और जाति के कारण इनके रिश्ते को स्वीकृति प्रदान नहीं की जाती और अवरोधों से जूझते हुए ये जीवन पथ पर बढ़ते हैं। भीष्म साहनी इस उपन्यास की अभिव्यक्ति में सक्षम हैं। समाज के सम्मुख प्रश्नचिन्ह लाने के लिए वे पक्षधर हैं, प्रेम के गहरे और सात्विक पक्ष से मानवता के सार–तत्व को सम्प्रेषित करने के लिए।

मुख्य शब्द : प्रेम, विवाह, धार्मिक सम्प्रदाय, समाज, मानवीय मूल्य ।

प्रस्तावना

'नीलू नीलिमा नीलोफर भीष्म साहनी' के अन्य उपन्यासों से अलग प्रेम कथा पर लिखा गया उपन्यास है। यह मूलतः मध्यवर्गीय युवा–प्रेम पर आधारित है। जो युवा मन के कोमल अनुभूति की व्यंजना करता है। प्रेम के कोमल तंतु जब सहज रुप में प्रस्फुटित होते है, तो निश्चय ही ये समाज के संदर्भ में सकारात्मक ऊर्जा लेकर आते हैं। किंतु ये कोमल तंतु कुचल दिए जाते हैं, परिवार, धर्म, जाति, अर्थ और संबन्ध के तले। इस संदर्भ में डा0 नामवर सिंह कहते हैं – ''ये दो प्रेमियों के अंतर्जातीय अंतर्धार्मिक संबन्ध और फिर अपने ही धर्म में एक की निष्ठुर वापसी की दास्तान है। नीलू से नीलिमा का मिलना नीलोफर का व्यक्तित्वांतर महत्वपूर्ण है।'' [1]

भीष्म साहनी प्रेम की भावना के पनपने और फिर पल्लवित होने की घटना से उपन्यास का आरम्भ करते हैं। कला भवन के छात्र नीलू और सुधीर के लिए प्रेम सर्वस्व है–

सुधीर के लिए उस निर्णायक क्षण को याद कर पाना कठिन था, जब नीलू उसके लिए सर्वस्व हो गयी थी, जब नीलू ने पलकें उठाकर उसकी ओर देखा था और सुधीर की दुनिया बदल गयी थी। [2]

दोंनों अलग–अलग सम्प्रदाय के होने पर भी, परन्तु प्रेम का ज्वार इतनी तेजी से उठा था कि ये हिचकोलें, छोटे–छोटे अवरोध उस ज्वार के नीचे न जाने कहाँ डूबते रहे थे। [3]

नीलू और सुधीर के प्रेम में सम्प्रदायिकता कुछ इस प्रकार आती है – इनका संवाद देखे –

''मैं गोश्त बहुत अच्छा बनाती हूँ, पर अब कभी नहीं बनाउँगी।'' मुझे गोश्त से बू आती है। सुधीर ने कहा, ''पर अगर तू बनाएगी तो मैं खा लूँगा।'' इस पर दोनों ठहाका मारकर हंसे। फिर सुधीर ने झट से पूछ लिया, तुमने बुर्का कभी ओढ़ा है? [4]

दत्तात्रय मुरुमकर इस उपन्यास की साम्प्रदायिक भावना पर लिखते हैं, इसी विषय पर दो प्रेम कथाओं के जरिए भावना, लगाव, प्रेम, समर्पण, एकता

को तरल, कोमल, संवेदनशीलता, भावुकता, अकाट्य रूप से एक–दूसरे से जुड़े रहने की भावना, परम्पराओं का खण्डन, उससे निर्माण होने वाली विडम्बना को केन्द्रीय आधार बनाकर साम्प्रदायिक सौहार्द की स्थापना करने वाला बहुत ही रोचक उपन्यास है, नीलू नीलिमा नीलोफर।[5] गहराते शाम में सुधीर कभी नीलू को हॉस्टल तक छोड़ने जाता, तो नीलू कभी उसे बस स्टॉप तक छोडने आती और आवागमन का सिलसिला चलता रहता। इसमें किसी और चीज का दखल नहीं था, न परिवार के रख रखाव का, न अपने–अपने परंपरागत संस्कारों का, न जमाने के तनावों – तल्खियों का, सर्वोपरि महत्व था तो, केवल एक दूसरे के प्रति गहरे लगाव का, एक दूसरे के निकट रह पाने का । [6]

सुधीर और नीलू निरंतर एक दूसरे से घनिष्ठ होते हैं, भीष्म साहनी वर्णन करते है– यथार्थ का धरातल मात्र एक अवलंब रह गया था, दोनों प्यार के पंखों पर मानों उड़ने लगे थे, जीवन की सारी वास्तविकता एक दूसरे के प्रति आकर्षण में सिमट आई थी, महत्व था तो एक दूसरे के सामिप्य का, एक दूसरे की प्रतीक्षा का, एक दूसरे को लेकर बुने जाने वाले भविष्य के सुनहरे सपनों का।'' [7]

धार्मिक परिधि को तोड़ दोनों जीवन पथ पर साथ बढ़ते हैं पर उन्हें जाते कोई देखता तो लगता जैसे दो पथिक एक दूसरे का हाथ थामे किसी लंबी यात्रा पर निकलें हों, दोनों तरूण, दोनों अकेले पर, एक दूसरे का अवलंब बने, केवल अपने सपनों और प्रगाढ़ प्रेम की पूंजी लिए हुए हैं।''[8]

किंतु दोनों के परिवार इस अंतर्धर्मी विवाह को स्वीकार नहीं करते। नीलू की ओर से उसका भाई हमीद और सुधीर के पिता को यह घृणास्पद और पापकर्म लगता है।

हमीद के शब्दों में यह हमारी बहन हमें रूसवा करने पर तुली हुई है, हमारी नाक कटवाने यहाँ पहुँच गई है, बेपर्द होकर हरामजादी । [9]

सुधीर के पिता प्रेम विवाह का नाम सुनते ही जलती लकड़ी उठा लेते हैं, जब उसने जलती लकड़ी उठाई थी तो वह पिए हुए था, पर नशे के बावजूद 'मुसलमान' शब्द उसकी चेतना को बँध गया था।[10]

व्यक्ति मन की यह साम्प्रदायिक चेतना पुरानी है डॉ, मंजुला राणा के अनुसार ''यह एक ऐसी विचारधारा है जो धर्म या संस्कृति की आड़ में एक समुदाय को दूसरे समुदाय से विलग करने, उनमें आपस में घृणा उत्पन्न करने और सहकार – सामंजस्य को मिटाकर वैमनस्य बढ़ाने का कार्य करती है।'' [11]

विवाहोपरान्त सुधीर और नीलू शिमला पहुंचकर डा. गणेश के घर शरण पाते हैं। जहाँ बुद्धिजीवियों द्वारा सत्यान्वेषण, छिद्रान्वेषण होता है। लेखक के शब्दों में ''यह अंतर्जातीय विवाह था। आज के माहौल में अंतर्जातीय, अतंर्धर्मी विवाह अनुसंधान का महत्वपूर्ण विषय है। इस एतबार से नीलू और सुधीर उनके लिए एक जीते–जागते उदाहरण बनकर आए थे। यो अनुसंधान की पहली शर्त तटस्थता होती है, पक्षधरता का उसमें कोई दखल नहीं होता है, भावनात्मक स्तर पर तो बिल्कुल भी नहीं। न ही अनुसंधानक की निजी दृष्टि का, न समाज के हित–अहित का। इसलिए एक तरह से सुधीर और नीलू उनके लिए प्रयोगशाला में लाए गए जीवधारियों के समान ही थे। [12]

बुद्धिजीवियों के निर्णय पर दत्तात्रय मुरुमकर का विचार है, ''साम्प्रदायिकता के संबन्ध में एक तीसरा वर्ग भी महत्वपूर्ण है, किन्तु वह किसी प्रकार का सार्थक निर्णय नहीं लेता। वह अपने प्रश्नों से तर्क की जड़ तक पहुँचने का नाम मात्र प्रयास करता है, वह है देश का बुद्धिजीवी, मध्यमवर्ग, जिसके प्रतिनिधि है प्रो. सेठी, डा. गणेश, उनकी पत्नी, डा. सहगल, डा. वर्मा, डा. शर्मा, डा. चावला, डा. असलम, रधुनाथ आदि। [13] इन अनुसंधानों से विलग लेखक अंजलि के शब्दों में भाव विह्वल हो उठे हैं, ''एक–दूसरे का हाथ पकडे घर से निकल आए हैं, अपने प्रेम के बल पर । वह भी आज के जमाने में ! छोटी सी नाव और हरहराते सागर के थपेडे। यह नहीं कि इनका मनोबल बढ़ाएँ, हमारे पतिदेव को प्रेमी हत्यारा और प्रेमिका बलि का बकरा नजर आ रही है।'' [14]

उपन्यास में दूसरी ओर नीलिमा और अल्ताफ का प्रेम है जो नीलिमा के बैरिस्टर डैडी को तो मान्य है किन्तु दादी मां इस रिश्ते के आड़ें खड़ी है अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ । दादी मां की परंपरागत मान्यताएं और दलीलें पुत्र और दोहती पर प्रभाव जमाती है।

''क्या अपनी जात–बिरादरी में तुम्हें अपनी बेटी के लिए कोई लड़का नहीं मिल रहा हैं?''

''कुछ होश करो बेटा। वह बच्ची है, निर्दोष है, वह अपना नफा–नुकसान नहीं समझ सकती । वह तो प्रेम के मद में अपने होश–हवास खो बैठी है, पर तुम तो होश में हो।''[15]

जबकि दादी मां स्वयं अपने ससुराल में ढेरों कष्ट उठा चुकी हैं, ''कोई सीधे मुँह बात नहीं करता था, बात बात पर उलाहने देता थे। ऐसी–ऐसी कड़वीं बातें कहते थे। मुझे लगता था जैसे मेरे मां बाप ने मुझे जलते कुंड में झोंक दिया है। स्त्री की तो जून ही खोटी है बेटा, मैं तुमसे क्या कहूँ'' ।[16]

अंततः दादी मां का झण्डा लहरा उठता है ''मैं आँख मूँद लूँ तो जैसा मन आए, करना । मैं न तो तुम्हारे रास्ते में रूकावट बनना चाहती हूँ न तुम्हारी बेटी के रास्ते में, तुम आजाद ख्याल लोग हो, नई रोशनी के लोग हो, बेटी तुम्हारी है, मैं बीच में कौन हूँ ?''[17]

और नीलिमा दादी मां और डैडी की खुशी के लिए अल्ताफ से नाता तोड़ सुबोध से जोड़ती है। यह जुड़ाव नीलिमा के जीवन को ध्वस्त कर देता है। मुरुमकर दत्तात्रय के अनुसार ''प्रेम भावना को जातिगत, धर्मगत, वर्गगत, प्रान्त, नस्लीय आधार पर हम विभाजित नहीं कर सकते। प्रेम एक नितान्त वैयक्तिक और सर्वोत्कृष्ट एवं पवित्र, निर्मल जल समान भावना है जिसके आधार पर रिश्तों का ढांचा खड़ा होता है, मानवीयता बनी रहती है अन्यथा सब कुछ तितर–बितर हो सकता है।''[18]

सुबोध मात्र पदोन्नति के लोभ से नीलिमा से विवाह करता है। अहंकारी, स्वार्थी, जड़, संवेदनहीन, अड़ियल सुबोध के साथ जीवन के हर पल को हंस–खेलकर, मौज–मस्ती के साथ जीने वाली नीलिमा के

गठबंधन पर आए दम्पत्तियों से दादी मां भावुक हो उठती है। वे अलग धर्म, जाति और देश के वर–वधुओं का बांहें फैलातें हुए, आर्शीवाद देकर स्वागत करती है, ''दादी मां की खिली बांहे देखकर वह क्षुब्ध हो उठा और एक तरह से अपने को मन ही मन धिक्कारता हुआ बाहर निकल आया। मां की बातें मानते जाओ और परंपरा की दलदल में धँसते जाओ''। [19]

सुबोध और नीलिमा का सम्बन्ध कुछ इस तरह का, इस दिशा में बन पड़ता है ''नीलिमा सिर से पांव तक सिहर उठी। थप्पड इतने जोर का पड़ा था कि उसका सारा शरीर झुनझुना उठा था। दर्द के मारे उसके मुंह से एक चीख सी निकली और आंतकित सी आंखों ने सुबोध की ओर देखा। सुबोध का चेहरा पीला पड़ गया था और होंठ कांप रहें थे''। [20]

''नीलिमा का निरन्तर समझौता करना, प्रतिपल इच्छाओं और आकांक्षाओं को कुचल डालना उसे आत्महत्या तक ले जाता है। आत्महत्या का सामाजिक संदर्भ में M.A. Elliott और F.E. Merril का विचार है। Sucide represents the final social tragic and irreversible of personal disorganistation. It is the last stage in a series of progressive changes in attitudes from the blind and all thai it means. [21]

(Social Disorganistation P. 302-03)

अब नीलिमा के डैडी पैसों के साथ – साथ उसे कार भेंट करते है तो सुबोध कार में एअर कंडीशनर की कमी के साथ कहता है, ''दहेज की चीज ब्याह के समय न देकर बाद में दी है, इसमें ऐसी बडी बात क्या है''? [22]

भारतीय समाज : मुद्दें एवं समस्याएं में, समाज का अर्थ बताया गया है दहेज निरोधक अधिनियम 1961 में दहेज मे परिभाषित किया गया है –'' दहेज का अर्थ कोई ऐसी सम्पत्ति या मूल्यवान निधि से हैं जो (अ) विवाह में भाग लेने वालें दोनों पक्षों में से किसी पक्ष के माता – पिता या किसी अन्य व्यक्ति को विवाह के अवसर पर या विवाह से पहले या विवाह के बाद विवाह की शर्त के रूप में दी हो या दानों मंजूर किया हो ''[23]

ऐसे ही परिवेश में नीलिमा जीने के लिए बाध्य है। अपनें अस्तित्व की रक्षा करनें के लिए अब नीलिमा वार पर प्रहार करना शुरू करती है। रोहिणी अग्रवाल के शब्दों मे ''नीलू नीलिमा नीलोफर, मं भीष्म साहनी इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि स्त्री के प्रति पुरूष की घृणा के पीछें कही उसका अपना हीन भाव हैं जो दम्भ के साथ जुडकर बर्बर हिंसा का रूप ले लेता है। सुबोध की नीलिमा से ब्याह कर दफ्तर में तीन दर्जे उंची स्थिति पाने की लालसा में जो आत्महीनता छुपी हैं उसी का ब्राय –प्रोडक्ट है। नीलिमा नीलिमा की नजर में अपनी हैसियत बनाएं रखनें के लिए बात बात पर बिगडना , अपना रोआब दिखाना और वक्त बेवक्त मार पीट कर असुरक्षा बोध से उबरनें की कोशिश करना।[24]

प्रश्न है कि नीलिमा के दमघोंटू जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है? दादी मां , डैडी या वह स्वयं ? पितृसत्तात्मक समाज फिर से अपने ढांचे के परिक्षण की मांग करती है। वर्तमान समय ने पुरानी लीक पर बनें रहने की उपयोगिता पर सवाल किए गए है। डा0 महेश आलोक लिखतें है, स्त्री और पुरूष के मनोविज्ञान में समाजिक सच्चाइयों का प्रभाव होता है।समाजिक ढांचें की परीक्षा करना ही लेखक का रचनात्मक उद्देश्य इस कृति का उद्देश्य बन जाता है।[25]

नीलू जो अपने परिवार को दरकिनार सुधीर को अपनाती है और दोनों के परिवार की गाडी चल निकलती है तभी नीलू का कहर भाई हमीद उनके जीवन में बवंडर बनकर आ णमकता है वह अपनी बहन को बहला फुसला कर मां से मिलाने के बहाने घर ले जाकर पहलें तो उसका हमल गिरवाता फिर शादी शुदा आदमी के साथ उसका निकाह तय करवाकर अपनी कहरता का परिचय देता है। नीलू की मां इस घटना का विरोध करती है ओर नीलू को सुधीर के पास वापस जानें में उसकी मदद करती है।

'' जा अब वही तेरा घर है। बेफिक्र होकर जा।[26]

दत्रात्रय मुरूमकर विश्लेषण करते हैं ''परन्तु हमीद इसे पाप नहीं मानता है। वह तो इसको 'सबाब का काम' बताता है। नस्लीय शुद्धि की बात हमीद जैसे धर्मान्धों के मन में दिखाई देती है। उसके लिये ऐसे घृणास्पद कार्य करने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं करते किन्तु 'माँ' माँ होती है, वह किसी भी धर्म की होने से पहले सिर्फ माँ होती है। इसलिए बेटी की उजडी कोख देखकर परेशान होती हैं, तिलतिला उठती है। अंत में वही अपनी बैटी को तलखाने से निकालकर उसे अपनें पति के पास जानें के लिए कहती है। मुस्लिम स्त्री में स्वतंत्र चेतावस्था को भीष्म साहनी ने रेखांकित किया है।''[27]

नीलू सचमुच सुधीर के पास जा पहुंचती है दोनो एक दूसरे में गुंथतें है, ''सुधीर के गलें में डाली उसकी बांह सुधीर को नही वरन् वर्तमान को जैसे आंलिंगन बद्ध किए हुए थी कही हाथों में निकल नही जाए। ''[28]

नीलम के भाग जानें की घटना से हमीद बौखला जाता है जिसे मां शांत करती है संवाद कुछ इस प्रकार–

जुम समझती हो मह उसे छोड देगें? दीन के दुश्मन का मै खून नही पी जाउ?

अपनी हमशीश का खून पिएगा, नामुराद! मां चिल्लाई।''[29]

एक ओर नीलू सुधीर के लिए सबकुछ छोडनें का साहस करती है तो दूसरी ओर नीलिमा दादी मां और पिता के लिए अल्ताफ को छोड सुबोध से नाता जोडती है। नीलिमा का यह बलिदान उसे मौत के मुंह में धकेल देता है ''मै फिर से अपनें घर की ओर क्यूं जा रही थी जिसमें से मेरी लाश उठनें वाली थी। मेरे पांव उस ओर क्यूं उठ रहे थे, जबकि वहां क्लेश और यातना और अवसाद के भंवरो में डूबती उतराती रही थी।''[30]

कई जाति, धर्म, वर्ग, वाला भारतवर्ष आज विकास के पथ पर अग्रसर है। देश की इकाई समाज , परिवार और फिर व्यक्ति है। व्यक्ति विशेष निश्चित ही अपनी संवेदना के आधार पर अपने जीवन का ताना बाना बुनते हैं। युवावर्ग अपने स्वभाविक रूप में प्रेम के कोमल तंतुओं से जुडतें है। किन्तु ये कोमल तंतु कितना विकसित होते हैऔर कितना कुचलें जातें है विभिन्न अवरोधो के तलें, भीष्म साहनी इसकी व्यंजना करतें है। सच्चे, गहरें, निःस्वार्थ प्रेम के मूल में मानवीयता की भूमिका होती है।

किन्तु हमारे संस्कार और पूर्वग्रह इतने जटिल हो उठतें हैं अवरोधों के रूप में कि वे अमानवीय स्तर तक जा पहुंचतें है। भीष्म साहनी ने कहीं न कहीं इन्ही तलों को छूने का प्रयास किया है। नीलू और नीलिमा इनका वह गढन है। जिसमें एक परंपरा से टकराहट पैदा होती है तो दूसरी समझौता।नामवर जी के शब्दों में, ''अन्ततः मां की ममता ही उसे सुधीर के घर लौटा देती है। नीलिमा खिलाडी अल्ताफ को दोस्त मानकर सुबोध से शादी कर लेती है। उपनिवेशवाद का ही तर्क है – अफसर के अधिनाथ होने का डर। मिसेज वर्मा नीलिमा को अपना बना लेती है क्रूरता के बावजूद सुबोध उससे डरता है।इस आसान ढंग से कही गयी जटिल कथा का सम्यक् मूल्यांकन हुआ ही नहीं।''[31]

इस पगकार नीलू नीलिमा नीलोफर अपनी प्रंसगिकता के साथ समाज के समक्ष कई प्रश्न लेकर आए है।जिसमे मुख्य रूप से उनके भावी जीवन का प्रश्न छिपा है।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी द्वारा प्रेम – कथा पर रचित 'नीलू नीलिमा और नीलोफर' उपन्यास समाज के समक्ष आज फिर से अपने मूल्यांकन की मांग करती है। युवाओं के प्रेम में मुख्य रूप से धर्म , जाति, परिवार, रिश्तें आडें आतें है और इनकी जड हमारे भीतर इतनी गहरी होती हैं कि यह अमानवीय स्तर तक जा पहुंचती है। नीलू अपने धार्मिक बंधन को तोडकर सुधीर से विवाह करती है वह परम्परागत मान्यताओं से टकरा उठती है। वही नीलिमा डैडी और दादी मां को प्रसन्न करने के मद से अल्ताफ को छोड सुबोध से नाता जोडती है। नीलू का जीवन खुशियों से भर जाता है जिसे उसका भाई हमीद अपनी साम्प्रदायिक चेतना से बाधित करता है जबकि स्वयं सुबोध इस प्रकार का व्यक्तित्व हैं कि वह नीलिमा की खुशियों का दम घोट देता है।नीलू और नीलिमा अपने जीवन के प्रति संघर्षशील हो उठती है। जहां नीलू का गर्भपात करवाकर उसका विवाह बीबी बच्चों वालें अधेड पुरूष से करवाया जाता है वही नीलिमा मानसिक संतुलन खो कर आत्महत्या का प्रयास करती है।वह सुबोध के जाल से बाहर निकलना चाहकर भी वापस उसी में फेंक दी जाती है। जिस प्रकार एक बार उसनेपिता और दादी मां का वार्तालाप सुनकर सुबोध से विवाह का फैसला लिया थावही फिर से बुआ और पिता का वार्तालाप सुन वापस सुबोध के पास जाने का फैसला करती है। नीलू और सुधीर अब अपने रहने की जगह बार–बार बदलतें हैं और नीलिमा सुबोध के सामने अल्ताफ की चर्चा करने लगती है। दोनों बाध्य हैं अपने जीवन को इस ढंग से जीने के लिए प्रतिपल प्राण्रक्षा, अस्तित्व रक्षा के लिए संघर्षरत। यह उपन्यास अत्यन्त प्रासंनिक है जो पुर्नमूल्यांकन की मांग करता है।

अंत टिप्पणी

1. *सं, नामवर सिंह आलोचना त्रैमासिक 2004राजकमल पृ0 नई दिल्ली पृ0 सम्प्रदाकीय*
2. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 09*
3. *वही पृ0 09*
4. *वही पृ0 09*
5. *मुरुमकर दत्तात्रयहिंदी साहित्य में वर्णित साम्प्रदायिकता का स्वरूप प्रकाशन संसथान नई दिल्ली 0012 पृ0 124*
6. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 11*
7. *वही पृ0 12*
8. *वही पृ0 14*
9. *वही पृ0 20*
10. *वही पृ0 24*
11. *राणा डा. मंजूला 'दसवें के हिंदी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,2008 पृ0 74*
12. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 29*
13. *मुरुमकर दत्तात्रय हिंदी साहित्य में वर्णित साम्प्रदायिकता का स्वरूप प्रकाशन संसथान नई दिल्ली 2012 पृ0 126*
14. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 30*
15. *वही पृ0 79*
16. *वही पृ0 81*
17. *वही पृ0 98*
18. *मुरुमकर दत्तात्रय हिंदी साहित्य में वर्णित साम्प्रदायिकता का स्वरूप प्रकाशन संसथान नई दिल्ली 2012 पृ0 124*
19. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 पृ0 111*
20. *वही पृ0 151*
21. *डा0 भीमवीर महाजन डा0 कमलेश महाजन – भारतीय समाज : मुद्दें एवं समस्याएं ' विवेक प्रकाशन नई दिल्ली 207 पृ0 328*
22. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 प्र0 196*
23. *डा0 महाजन धर्मवीर महाजन कमलेश – भारतीय समाज : मुद्दें एवं समस्याएं' विवेक प्रकाशन नई दिल्ली 207 प्र0 127*
24. *सं, नामवर सिंह आलोचना त्रैमासिक 2004 राजकमल प्र0 नई दिल्ली 2004 प्र0 220*
25. *आलोक डा0 महेश 'भीष्म साहनी का कथा साहित्य' नवराज प्रकाशन नई दिल्ली 2011 प्र0 23*
26. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 प्र0 164*
27. *मुरुमकर दत्तात्रयहिंदी साहित्य में वर्णित साम्प्रदायिकता का स्वरूप प्रकाशन संसथान नई दिल्ली 2012 प्र0 127*
28. *साहनी भीष्म नीलू नीलिमा नीलोफर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2000 प्र0 163*
29. *वही प्र0 167*
30. *वही प्र0 193*
31. *सं, नामवर सिंह आलोचना त्रैमासिक 2004 राजकमल प्र0 नई दिल्ली 2004 प्र0 सम्पादकीय*